कन्हैया मध्यप्रदेश के सीहोर ज़िले की बुदनी तहसील में रहता है। उसके गाँव का नाम पाताल्खोर है।उसके माता-पिता खदान में पत्थर तोड़ने का काम करते हैं। कन्हैया का रोज़ का नियम है – सुबह छह बजे उठना और सात बजे तक खा-पीकर घर से निकल पड़ना। हाथ में एक लम्बी-सी रस्सी लिए जिसके एक सिरे पर एक चुम्बक बँधी होती है! यही है उसका पैसा कमाने का यंत्र। इससे वह एक दिन में बीस से लेकर सौ रुपए तक कमा लेता है। यह दिनचर्या अकेले कन्हैया की नहीं है। गाँव की मुन्नी, राजा, जितेन्द्र, पप्पू, देवा जैसे लगभग सौ बच्चों का यही रोज़ का काम है।

खर्रा घाट पर छपाक!

शिवनारायण गौर

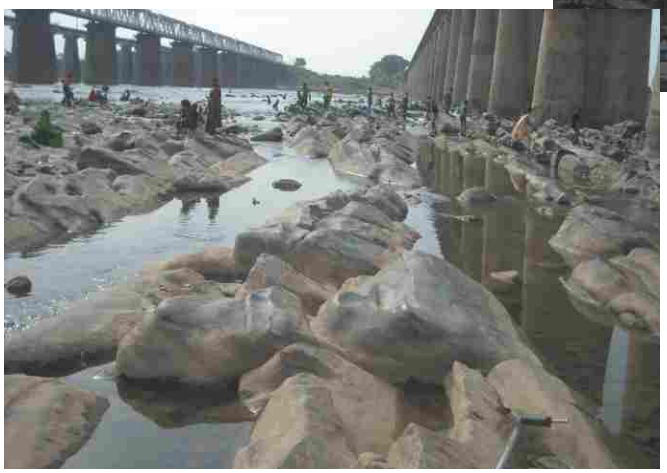

कन्हैया के गाँव के पास से नर्मदा नदी बहती है। मध्यप्रदेश के अमरकंटक से निकलकर करीब 1300 किलोमीटर का सफर करने के बाद नर्मदा गुजरात में खम्भात की खाड़ी में गिरती है। आमतौर पर लोग त्यौहारों पर नर्मदा में नहाने आते हैं। नहाने और नारियल-प्रसाद के अलावा लोग नदी में पैसे भी डालते हैं। और इसी पैसे को इकट्‌ठा करना नदी किनारे बसे कई लोगों का काम बन गया है। हर घाट पर पैसे बीनने वालों की भीड़ होती है। केवल घाट पर ही नहीं नदी पर बने पुलों से भी आते-जाते लोग नदी में पैसे डालते हैं। ऐसी जगहें जहाँ दो-तीन पुल एक साथ बने हैं वहाँ पैसा बीनने वालों की भीड़ रहती है।

होशंगाबाद भी ऐसी ही एक जगह है। यहाँ नर्मदा पर तीन पुल बने हैं। दो पुल रेलगाड़ियों के लिए और एक सड़क वाला पुल। इन पर से रोज़ाना सैकड़ों गाड़ियाँ गुज़रती हैं। आमतौर पर हर गाड़ी में सवार थोड़े-बहुत यात्री तो नर्मदा में पैसे डालते ही हैं। पैसे गिरते ही कन्हैया और उसके साथी इन्हें बीनने पानी में कूद पड़ते हैं।

फोटोः शिवनारायण गौर

पहले बीनने का चक्कर कई बार मुसीबतें भी खड़ी कर देता है। बच्चों का पत्थरों के बीच गिर जाना आम घटना है। कभी-कभी तो काँच आदि भी पाँव में गड़ जाते हैं।

इन समस्याओं से निपटने के लिए बच्चों ने कई नए-नए तरीके इजाद किए हैं। चुम्बक का इस्तेमाल इनमें से एक है। आमतौर पर नदी में एक, दो या पाँच रुपए के सिक्के डाले जाते हैं जो चुम्बक में चिपक जाते हैं। खर्रा घाट के बच्चे इस तकनीक से पैसे बीनने का काम बहुत बढ़िया तरीके से करते हैं। इसके लिए वे गोल चुम्बक का उपयोग करते हैं। चुम्बक पाने का सस्ता और आसान तरीका है रेडियो में लगने वाला स्पीकर कबाड़ना। और यह मिलता है उन्हें कबाड़ी के पास से। स्पीकर के पिछले हिस्से में चुम्बक लगा होता है। वे इसे तोड़कर इसमें एक लम्बी-सी रस्सी बाँध लेते हैं। बस तैयार हो गया वह यंत्र जिससे वे गहरे पानी से पैसा निकाल सकते हैं।

दिन भर पानी में रहने के कारण बच्चों के पैरों की चमड़ी सफेद हो जाते हैं। नर्मदा नदी पर होशंगाबाद के अलावा और भी कई घाट हैं जिन पर पुल बने हैं। यहाँ से रोज़ाना सैकड़ों लोग आते-जाते नदी में पैसे डालते हैं। और इन्हें बीनने कन्हैया जैसे सैकड़ों बच्चे स्कूल छोड़ नर्मदा की ओर दौड़ पड़ते हैं।